प्रधानमंत्री श्री पी0वी0 नरसिंहाराव द्वारा दिनांक 15 अगस्त, 1995 को लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र के नाम संदेश

प्रिय देशवासियों,

आज स्वतंत्र भारत के 49वीं वर्षगांठ के शुभप्रभात की पावनवेला में, मैं आप सबको हार्दिक बधाई देना चाहता हूं। आपके सहयोग से, आपकी सहायता से, आपके संकल्प से यह राष्ट्र आज विश्व के सारे राष्ट्रों में अपना सिर ऊंचा करके खड़ा है। मेरी सरकार की पंचवर्षीय कालावधि में आज मैं पांचवी बार आपके सामने उपस्थिति हुआ हूं। ये मेरा कर्तव्य है कि पिछली इस कालावधि के सिलसिले में जो भी लेखा-जोखा आपके सामने रखना हो, आज में रखूं। कुछ भविष्य का भी जो संकेत मुझे लगता है, जो चित्र मेरे मस्तिष्क में है, उसकी तरफ भी थोड़ा इशारा कर दूं।

आप जानते हैं सन् 91 में जब ये सरकार आई थी देश का क्या हाल था? राजनीतिक विघटन के कगार पर देश खड़ा था और आर्थिक संकट के कगार पर देश खड़ा था, लगभग नादारी के कगार पर खड़ा था। तब से आज तक आपकी सहायता से, आपके सहयोग से, आपके आशीर्वाद से ये सरकार कुछ उपलब्धियां कर चुकी है, कर सकी है और सबसे बड़ी बात ये है कि आज विश्व में सभी को ये विश्वास हो गया है कि भारत में राजनीति स्थिरता भी है, सामाजिक समरसता भी और आर्थिक सौष्ठव भी है। इस बात में आज किसी को कोई शंका नहीं रही। ये बहुत बड़ी उपलब्धि हमारी हुई है, आपकी हुई है इसलिए भी मैं आपको बधाई देना चाहता हूं। ये उपलब्धि हमें बड़ी मेहनत से करनी पड़ी है और कई जगहों पर हमारे देश में जो अशांति के लक्षण नजर आते थे, बल्कि अशांति फैली हुई थी सालों से, हमने उस पर काबू पा लिया। ये भी आप जानते हैं। पंजाब, आसाम, बोडोलैण्ड वगैरहा जहां अशांति थी और सालाह-साल से थी, उसपर हमने काबू पा लिया, ये बात कई बार कही जा चुकी है, आपके सामने आ चुकी है, आप इसमें से गुजर चुके हैं। तो मुझे बहुत ज्यादा इसके बारे में कहना नहीं है।

आज मुझे लगता है कि सबसे बड़ी समस्या जो सचमुच कोई समस्या नहीं है, एक कृत्रिम ढंग से बनाई हुई समस्या है जम्मू कश्मीर की, हमारे सामने आई है। पिछले चार पांच साल से वहां अशांति है। पाकिस्तान की तरफ से जो हिंसा का निर्यात हो रहा है, टेररिज्म का जो निर्यात हो रहा है उसका एक चित्र कल देख चुके हैं आप, आपके सामने आ चुका है कि कितनी क्रूरता से, कितनी बरबरता से वहां ये आतंकवादी काम कर रहे हैं और आतंक मचा रहे हैं। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि सचमुच ये कोई समस्या ही नहीं है। सच्ची बात यह है कि जम्मू और कश्मीर भारत का अभिभाज्य भाग है और उसे कोई हमसे तोड़ नहीं सकता, छीन नहीं सकता। अब रही बात कि कुछ इलाके पर पाकिस्तान ने ग़ासिबाना ..कब्जा कर रखा है। पाकिस्तान को कोई हक़ीयत नहीं है, कोई अधिकार नहीं है और किसी भी दृष्टिकोण से पाकिस्तान कोई क्लेम नहीं कर सकता, कोई दावा नहीं कर सकता। लेकिन चूंकि पड़ौसी मुल्क है और ये उनके लिए संभव है कि लोगों को ट्रेनिंग देकर, पैसा देकर, हथियार देकर भेजें और यहां खलबली मचाये रखें। उन्होंने क्यूं ये कर रखा है ये किसी की समझ में नहीं आ रहा है।

आज सारी दुनिया जान रही है कि पाकिस्तान ने जो भी कर रखा है कश्मीर में उसके पीछे हेतु क्या है। अब उनकी समझ में आया है कि यहां जो कुछ हो रहा है कश्मीर में उसका जिम्मेवार कौन है और सीधे सीधे पाकिस्तान पर उसकी जिम्मेवारी आयद होती है। हम पहले से तैयार हैं, कोई बात होगी, अच्छे संबंध बनाने की तो उसपर हम बात करें, बैठें और ये सारी कार्यवाहियां, कारिस्तानियां बंद कर दें वो, फिर बैठेंगे। कोई बात होगी, कोई हममें मतभेद होगा तो उसको सुलझाने के लिए हम हमेशा ही तैयार हैं। जब वर्तमान प्रधानमंत्री ने पद स्वीकार किया उसी दिन मैंने उनको पत्र लिखा। उसमें कहा कि आइये शिमला समझौते के आधार पर हम बैठ कर बात करें। उससे पहले हमने उनको 6 दान पेपर दिए थे जिनको नॉन पेपर कहा जाता है। इसलिए कि उसमें जो हम कहना चाहते हैं कहते हैं। लेकिन उनको कोई आधिकारिक महत्व नहीं दिया जाता, इसलिए उनको नॉन पेपर कहा जाता है। 6 हमने दिए थे और एक एक नॉन पेपर में वो बात लिखी थी जो गौरतलब है, जो तस्बियातलब है, जो उनके हमारे बीच में हमें निपटाने की बात है। उस पर कोई जबाव नहीं आया। उल्टे उसके एवज हमको दो ऐसे कागज दिए गये जिनमें असम्भव शर्तें रखी गयीं। हमारा कहना है कि कोई शर्त न रखिये, बिना किसी शर्त के हम बात करेंगे। लेकिन उन्होंने ऐसी शर्तें रखी हैं जो हमारे लिए स्वीकार योग्य हो ही नहीं सकती हैं। हम उनको छू नहीं सकते हैं, उनके बारे में सोच भी नहीं सकते हैं। इसका मतलब यही हुआ कि उनको बात करना नहीं था। उन्होंने अपनी ना-रज़ामंदी को इस तरह ज़ाहिर किया कि उन कागजों में उन्होंने इम्पोसिबल कंडीशन्स रखे। ये आज की परिस्थिति है।

मैं समझता हूं कि अब भी अगर ये निर्यात बंद हो जाये टेररिज्म का और दुनिया भर में जहां जहां कोई सभा होती है वहां जाकर कश्मीर के बारे में वो जो प्रचार करने की आदत जैसी पड़ गयी है वो बंद हो जाये, क्योंकि उससे कोई फायदा नहीं हुआ है, किसी ने उसको कोई बहुत ज्यादा नोटिस नहीं लिया है, इसलिए ये सारे बंद हो जायें। तो हम बात कर सकते हैं और बहुत अच्छे हमारे संबंध बन सकते हैं। जैसे हमारे संबंध अन्य हमारे पड़ौसी राष्ट्रों से और दुनिया के सभी राष्ट्रों से हैं। ये उनके हाथ में है। मैं इतना ही कहूंगा कि वो फिर सोचें और जो आज की परिस्थिति है और 40 साल तक जो उन्होंने करके देख लिया, आजमा कर देख लिया, हर तरह से आजमाया। इसका कोई नतीजा नहीं निकला, दूरी ही बढ़ती गयी। उस दूरी को कम करना है तो यही उनके सामने एक रास्ता है और हम उसके तैयार रहेंगे। हम बराबर उसको रिस्पोण्ड करेंगे। यही है कि वो इन कामों को छोड़ दें।

इधर कुछ नई समस्याऐं, नये नये सवाल हमारे देश में पैदा हो रहे हैं। एक जमाना था जबकि धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर बहुत कुछ लोगों को उभारा गया, उनके जज्बात को उभारा गया और उससे राजनीतिक प्रयोजन तात्कालिक ही क्यों न हो लेने की कोशिश हुई। मैं सोचता था कि जब हमने विकास का काम शुरू किया इतने बड़े पैमाने पर तो शायद ये जो रवैया था वो कम हो जाएगा। एक हद तक कम हो भी गया, लेकिन अब लगता है कि फिर उन्हीं का फायदा उठाने की कोशिश हो रही है। मैं बड़ी विनर्मता से कहना चाहता हूं कि धर्म और राजनीति को मिलाने की कोशिश कभी भी कामयाब नहीं होगी। उससे न धर्म- धर्म रहेगा, न राजनीति-राजनीति रहेगी। दोनों भी बिगड़ जाएंगे फिर एक बार पुनर्विचार करें और जो हमारे रोजी रोटी के सवाल हैं, हमारे राष्ट्र के जो सवाल हैं, राष्ट्रीयता के जो सवाल

हैं, राजनीतिक जो सवाल हैं उनपर हम चर्चा करें। उनकी चर्चा करते हुए, उनका हल ढूंढने की कोशिश करें, न कि फिर धर्म की तरफ वापिस जायें। धर्म अपनी जगह है, राजनीति अपनी जगह है।

एक और सवाल उठा है 'पर्सनल लॉ' का, 'वैयक्तिक कानून' का, इसको भी उठाया गया है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कोई नई बात नहीं है। जब हमारा संविधान बना था तब भी संविधान परिषद में ये बात हुई थी, ये बात उठी थी और डॉक्टर अम्बेडकर ने जिन्हें श्रेय जाता है हमारे संविधान की रचना का। उन्होंने खुद कहा था कि हम केवल अधिकार लेना चाहते हैं। इसका मतलब ये नहीं है कि इसको यूनीफॉर्म बनायेंगे। ऐसा नहीं हो सकता है, इसमें कई कठिनाइयां हैं। ये नहीं कि हम संविधान को नहीं मानते, संविधान को मानते हैं। लेकिन जो कठिनाइयां हमारे सामने हैं और 40 साल से उन कठिनाइयों को हमें तजुर्बा हो चुका है, उनके चलते हमारी प्राथमिकता क्या है? आज हमें किस बात पर ज्यादा जोर देना है, किस पर अपना ध्यान केन्द्रित करना है। इसका तारतम्य हमारे सामने होना चाहिए।

मैं ये समझता हूं कि आज हमारे यहां कई लोगों के अपने अपने वैयक्तिक कानून हैं। हिंदुओं के हैं, मुसलमानों के हैं, पारसियों के हैं और लोगों के हैं, ईसाइयों के हैं। इन सबको यूनीफॉर्म बनाने का जो काम है, इतना आसान नहीं है। यूनीफॉर्म का मतलब ये होता है कि सबको एक ही वर्दी पहना दीजिए तभी यूनीफॉर्म हो जाएगा। तो इसका मतलब ये है कि एक समुदाय के कानून को दूसरे पर लागू कीजिए या दूसरे के कानून को पहले पर लागू कीजिए या दोनों को हटा कर कोई तीसरा लाकर लागू कीजिए। तभी यूनीफॉर्म बन सकता है वरना नहीं सकता।

मैं ये कहना चाहता हूं कि आज ये अत्यंत कठिन है, इसमें हमें नहीं पड़ना चाहिए, देखा जाएगा आगे भविष्य में क्या होगा हम आज नहीं कह सकते हैं। लेकिन आज के लिए ये कोई काम ऐसा नहीं है जिसको हम उठा सकें और फिर लोगों की मर्जी के खिलाफ जिस कानून को आप लाना चाहते हैं, उसका असर जिनपर पड़ने वाला है उस समुदाय की मर्जी के खिलाफ हम कुछ भी नहीं कह सकते। हमारे यहां एक बहुत पुरानी उक्ति है, एक मैक्सिम है- "यद्यपि शुद्धं लोक विरूद्धम, नारचणीयम्-नाचरणीयम्"। अच्छे से अच्छा क्यूं न हो काम लेकिन वो जिनपर असरंदाज हो रहा है उनके विरूद्ध हो, उनकी मर्जी के विरूद्ध हो तो वो नहीं करना चाहिए और उसपर आचरण नहीं होना चाहिए। ये बहुत बड़ी शिक्षा है हमारी पुराने जमाने से चली आती है। इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूं कि इस मामले में आज हम मजाकलत बिल्कुल नहीं करेंगे। आज ही नहीं मुझे लगता नहीं है कि कई वर्षों तक एक लंबे समय तक हम इसको पूरी तरह से अंजाम दे सकेंगे। इसके बारे में सोचना भी आज मुझे मुनासिब नजर नही आता।

आपने कश्मीर के बारे में देख लिया। दूसरे जो इलाके हैं, जहां कुछ अशांति का वातावरण बन रहा है जैसे हमारे नॉर्थ-ईस्ट में उनसे हम निपटने की कोशिश कर रहे हैं और मैं समझता हूं कि वहां भी लोग तंग आ गये हैं हिंसा से, कुछ बात चल रही है वो सोच रहे हैं कि हमें मैनस्ट्रीम में आना चाहिए और मैं उम्मीद करता हूं कि बहुत जल्दी ये भी बात निपट जाएगी।

अब मैं संक्षेप में हमारे आर्थिक पहलू पर आता हूं। जिसके बारे में आपको पता है। लेकिन कभी कभी लोगों को कुछ दूसरी बात कह कर बहकाने की कोशिश होती है इसलिए मैं एक पर्सपेक्टिव में रखना चाहता हूं। 91 में हम नादारी के कगार पर थे, 91 में हमने सोचा कि देश बिल्कुल दिवालिया हो जाएगा, हमारे पास कोई पैसा नहीं था, मिट्टी का तेल जैसी वस्तु लाने के लिए भी पैसा नहीं था। विदेशी मुद्रा एकदम कम हो गयी थी और तब से हमने बड़ी मुश्किल से हमने इसको संभाला और आज हम ये कह सकते हैं चार साल के अंदर की हमने जो प्रगति की है वो बहुत बड़ी प्रगति है। जहां ढाई हजार करोड़ हमारे पास नहीं थे 91 में, आज साठ हजार करोड़ की विदेशी मुद्रा हमारे यहां है। जिससे हमें किसी चीज के मंगाने में कोई आज परेशानी नहीं है, कोई कठिनाई नहीं है।

उद्योगों को हमने मुक्त किया, परमिट से, लाईसेंस से जिसमें वो फसे हुए थे और जिसके चलते उनमें कोई प्रगति नहीं हो सकती थी, उनको हमने मुक्त किया। परमिट राज और लाइसेंस राज बड़ी हद तक समाप्त हो गया। आज कोई थोड़े ही हैं जिनसे संबंध है हमारे प्रतिरक्षा वगैरह का, उन थोड़े उद्योगों को छोड़ कर किसी भी उद्योग में लाइसेंस वगैरह की कोई जरूरत नहीं है और वो चल रहे हैं। और ये सुनकर आपको खुशी होगी कि 3 साल के अंदर क्योंकि पहले साल तो न कोई यहां आना चाहता था, न हम उनको बुला सकते थे। हम खाली देखते रहे, उनको समझाते रहे कि हमारी पॉलिसी बदल गयी है, हमारी नीति बदल गयी है। लेकिन किसी ने हम पर भरोसा ही नहीं किया। ये जो भी प्रगति हुई है कोई ढाई तीन साल की है उससे अधिक की नहीं है।

तो मैं आपके सामने ये आंकड़ा रखूं तो मैं समझता हूं कि आपको संतोषजनक लगेगा कि अड़सठ हजार करोड़ का पूंजी यहां निवेश हुआ है, अड़सठ हजार करोड़ का और हमारे जो सार्वजनिक क्षेत्र है उसमें भी हमने कोई 25 हजार के करीब निवेश किया है तो कुल मिलाकर हमारा उद्योग आज बड़े जोरों से चल रहा है, आगे बढ़ रहा है। हम क्या कर रहे हैं अपने पैसे से। अपने पैसे से हम सारे कार्यक्रम जितने गरीबों के हो सकते हैं, गरीबी को हटाने के, जितने पहलू हो सकते हैं उन सारे पहलुओं पर हमने कार्यक्रम शुरू कर दिया है।

आप देखेंगे कि 91 में हम कुछ नहीं कर पाये क्योंकि हमारे पास पैसा नहीं था, 92 से हमने शुरू किया और 92 से शुरू करके जो हमने योजनाएं शुरू की, वो सारी योजनाएं ऐसी हैं, सबकी सब ऐसी हैं जो गरीबों से संबंधित हैं, गरीबी हटाने के कार्यक्रम से संबंधित हैं। 92 में पहली जनवरी को मैंने संपुष्ट सार्वजनिक वितरण प्रणाली का आगाज किया था, उद्घाटन किया था बाड़मेर में, राजस्थान के एक जिले में। इसका मतलब ये था कि जो हमारे देश में कोई 17 सौ, 18 सौ ब्लॉक बहुत ही गरीबों के हैं या तो पहाड़ी इलाके होंगे या रेगिस्तानी होंगे या आदिवासी होंगे। और इसी प्रकार के इलाके जहां बहुत ही गरीब लोग बसते हैं उनपर हमने ध्यान केंद्रित किया और वहां खाने पीने की वस्तुओं को पहुंचाने के लिए एक बड़ा सुनिश्चित कार्यक्रम हमने तैयार किया, वो 92 में और वो पहली जनवरी को मैंने किया और उसी वक्त हमने एक और कार्यक्रम भी शुरू किया। हमारे गांवों में जो हमारे दस्तकार हैं जैसे बढ़ई है, सुनार है, लौहार है उनके जो औजार हैं वो बहुत पुराने हैं, इसलिए उनकी उत्पादकता कम होती जा रही है और वो और लोगों के साथ होड़ में खड़े नहीं रह सकते हैं। इसलिए उनको हमने आधुनिक सामान, आधुनिक साजोसामान, उनका औजार ठीक करने

के लिए हमने एक बहुत बड़ा कार्यक्रम शुरू किया। कोई ढाई लाख हमारे दस्तकारों को औजार मिल चुके हैं और इस एक साल हम और दो लाख को देने वाले हैं। तो इसका मतलब ये हुआ कि लगभग कोई साढ़े चार या पांच लाख हमारे जितने दस्तकार हैं, काम करने वाले गांव में उन सबके औजार ठीक हो जाएंगे या आधुनिक हो जाएंगे उनकी उत्पादकता बढ़ेगी और उसे उनको अपने गांव छोड़ कर बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। शहरों में जाकर बसने की जरूरत नहीं पड़ेगी और हमारा ये अनुमान है कि कई लोग जो शहर चले जाते अब गांव में बस गये हैं और वहां उनकी उत्पादकता बढ़ी है और उनकी आमदनी बढ़ रही है।

93 में फिर हमने महिला स्मृद्धि योजना शुरू की, उसके साथ साथ सुनिश्चत रोजगार योजना शुरू की, एक एक गांव में जबकि काम नहीं रहता है खेती का बंद हो जाता है, कहीं सूखा पड़ जाता है तो लोग वहां से चले जाते हैं शहरों में, उसको रोकने के लिए हमने कम से कम सौ दिन का रोजगार उनको मुहैया करने का उनको एक स्कीम बनया था और वो स्कीम बहुत ही अच्छी तरह से चल रहा है और जहां-जहां इसकी जरूरत है वहां ये चलाई जा रही है और इसका बहुत अच्छा असर भी हुआ है। ये मैं आपसे कहना चाहता हूं। तो 92 में शुरू किया, 93 दो तीन हमारे शुरू हुए, प्रधानमंत्री रोजगार योजना के नाम से हमारे नौजवानों के लिए। 93 में हमने केवल शहरों तक उसको रखा था। 94 में हम उसे ले गये देहातों में।

तो आपसे कहने का ये तात्पर्य है कि हमारा जितना पैसा सरकार का है उसको हमने गरीबों पर खर्च किया है। गरीबी हटाने के जितने कार्यक्रम हो सकते हैं उनपर हमने लगाया है और 92 से लगातार लगाते चले आ रहे हैं और हमारा जो भी कार्यक्रम है सरकार के वो इसी प्रकार के हैं। हमने कभी किसी पैसे वाले को पैसा नहीं दिया, उनका पैसा लाकर उसका यहां निवेश करवा दिया उद्योगों में, हमने उनको कोई पैसा नहीं दिया और उनके आने से हमारा जो पैसा बचा था उसको हमने गरीबों पर खर्च किया। इस साल बहुत बड़े पैमाने पर हमने गरीबों के कार्यक्रम उठाये हैं और अंतर गुणात्मक है जो हमारे पुराने कार्यक्रम थे और आज के कार्यक्रमों में हमने सबसे पहले ये किया है कि बच्चों को एक वक्त का खाना हम अपने प्राथमिक पाठशालाओं में दें, सारे देश में। इससे पहले किसी राज्य में हुआ किसी में नहीं हुआ। किसी में होते होते रूक गया, कुछ दिन चलकर फिर रूक गया। ये इसी तरह से चला आता है। हमने ये तय किया है कि क्योंकि हमारे पास आज अनाज की कोई कमी नहीं है। कोई साढ़े तीन करोड़ टन अनाज हमारे पास मौजूद है उसमें से हम अनाज देंगे और हमारे बच्चों को पौष्टिक आहार देने की कोशिश कर रहे हैं और उसके लिए जो स्कीम बनी है आज से वो शुरू होने वाली है। ये चारों स्कीमें जो आज हमने शुरू की हैं, आज ही से शुरू होने वाली हैं, इसके बारे में मैं कह भी चुका हूं। मैं संक्षेप में इतना ही कहना चाहता हूं कि ये कार्यक्रम केन्द्र सरकार ने पहली बार उठाये हैं।

दूसरा यह है कि हमारे यहां जो गरीबी की रेखा के नीचे लोग हैं, गरीब लोग हैं, उनमें से कोई कमाने वाला परिवार का बड़ा-बूढ़ा मर जाता है तो परिवार एकदम निसहाय हो जाता है। तो उनको हम ऐसे परिवार को पांच हजार रूपया यदि उसकी मृत्यु स्वाभाविक हो जैसे मामूली सभी लोग मरते हैं, लेकिन अगर किसी दुर्घटना से वो मरता हो, उसकी मृत्यु होती हो तो दस हजार रूपया देने का किया है। ये भी पहली बार, मरकज़ी सरकार, पहली बार केन्द्र सरकार ये जिम्मेवारी उठा रही है।

फिर हमारे जो मातृत्व की सहायता को जो कार्यक्रम है वो भी इसी प्रकार है कि जब बच्चा होता है किसी महिला के तो उसको देखने वाला नहीं रहता, उसके पास दवा दारू के लिए कुछ नहीं रहता गरीबों में तो इसलिए उनको भी हम सहायता देना चाहते हैं और वो एक बना हुआ है। और सबसे बड़ी बात, सबसे नई बात यह है आपने कहीं सुना है कि गरीब से गरीब आदमी भी अपने जीवन का बीमा कर सकता है। नहीं सुना होगा क्योंकि ऐसा नहीं हुआ है। बीमा बहुत कुछ हो रहा है हर जगह, लेकिन जो गरीबी की रेखा के नीचे हैं उनका बीमा कभी हुआ नहीं है और न किसी ने कराया है। ये एक बृहत कार्यक्रम हम उठा रहे हैं केन्द्र सरकार की तरफ से। दो प्रकार के बीमे हम करवाना चाहते हैं, एक वो बीमा जो वहां के खाते पीते लोग गांव के करवाना चाहते हैं और एक वो बीमा जो बहुत ही गरीब लोगों के लिए है और जिसमें उनको आधा पैसा देना पड़ता है, बाकी आधा केन्द्र सरकार और राज्य सरकार की सहायता से उसको मिल जाता है और ये संभव पाया गया है कि सभी लोगों का वहां बीमा हो सकता है और उसको हम ग्रुप इंश्योरेंश के बिना पर कर रहे हैं। एक एक व्यक्ति का नहीं है, गांव को लिया है या ब्लॉक को लिया है, यूनिट बनाया है। वहां कुछ लोग बीमा करवाते हैं तो बाकी लोगों में से अगर कोई मर जाय तो उसको पैसा मिल जाय, पांच हजार रूपया। ये बीमा का जो कार्यक्रम है ये नया कार्यक्रम है, इसे आप देखें और देखें कि पहली बार हम आखिरी गरीब आदमी तक केन्द्र सरकार पहुंचने की कैसे कोशिश कर रही है।

इसके बाद पिछली साल, पिछले साल हमने चाइल्ड लेबर के बारे में जो बच्चे काम करते हैं, मजबूर होकर, गरीबी के कारण उस पद्धति को कम करने के लिए उसको मिटाने के लिए और खासतौर से जो ऐसे उद्योगों में काम करते हैं जिनसे उनकी सेहत बहुत जल्दी बिगड़ जाती है हैजर्ड डस्ट जिनको कहते हैं। ऐसे उद्योगों से उनको हटाने के लिए कार्यक्रम शुरू किया था, उस पर बहुत बड़े पैमाने पर काम हो रहा है। आज एक साल से वो चल रहा है और इसकी प्रगति बहुत अच्छी है। इस प्रकार मैं आपको बताना चाहता हूं कि चार साल से हम लगातार गरीबों के कार्यक्रम में लगे हुए हैं। हर साल कुछ न कुछ उसमें बढ़ोत्तरी हो रही है और ये किसी एक समय के लिए नहीं है, ये हमेशा के लिए हैं। जो हमने 91 में शुरू किया हो, 92 में शुरू किया हो, इस साल शुरू किया हो। कोई भी कार्यक्रम ऐसा नहीं है जो दो चार साल के बाद बंद हो जाएगा। जब केन्द्र सरकार कोई कार्यक्रम उठाती है तो वो हमेशा के लिए चलता रहता है। इसमें कोई शंका की बात नहीं है। ये मैं आपको आश्वासन देना चाहता हूं कि ये सोच समझ कर किया है। जो काम 91 में नहीं कर सकते थे वो 92 में शुरू किये। जो 92 में भी नहीं कर थे वो 93 में शुरू किये। इस प्रकार हमारे पास पैसा कितना है, कितनी गुंजाइश है, कितना किया जा सकता है, इन सारी चीजों का हिसाब किताब लगाकर ही कर रहे हैं।

चुनांचे आज भी जो हम बच्चो को खाना खिलाने का कार्यक्रम शुरू कर रहे हैं, वो सारे देश में नहीं कर पा रहे हैं। पैसा उतना नहीं है हमारे पास। हम 3 साल में इसको पूरा करना चाहते हैं। इस साल उन गरीब इलाकों को हमने लिया है, कोई ढाई हजार ब्लॉग्स में, जहां बहुत गरीब लोग बसते हैं। और गरीब बच्चों के लिए यह सबसे हमने पहले शुरू किया है। अगले 2 साल में हम पूरे देश को कवर करना चाहते हैं, लेकिन भगवान ने चाहा, तो शायद अगले 2 साल में जो हम काम करना चाहते हैं वो एक ही साल में हो जाये। अगले ही

साल हो जाये, 96 में हो जाये। इसकी संभावना भी है, लेकिन कहने की बात यह है कि हमने जितना हो सकता है, उतना ही किया है। उतना ही शुरू किया है, सारा हिसाब-किताब लगाकर। तो हम सोच समझकर इन कार्यक्रमों को उठा रहे हैं और आगे बढ़ रहे हैं। इन कार्यक्रमों के कारण जो भी लोगों को फायदा होता है, वो किसी से छिपा नहीं है और वो फायदा आपको नजर आने लगा।

आर्थिक जो हमारा कार्यक्रम है, उसमें निर्यात का भी बहुत बड़ा हाथ है, आप जानते हैं। हम पहले कच्चा माल यहां से भेजते थे। चाहे चावल भेजें, चाहे धान भेजें या गेहूं भेजें कच्चा माल भेजते थे। आज कच्चा माल हम बिलकुल नहीं भेज रहे हैं। उससे अधिकांश हमारे निर्यातों में मशीनरी है और जिसको वैल्यू एडिट कहते हैं, ऐसी वस्तुएं हैं जो यहां बनती हैं और जो विश्व के सभी मार्केटों में, सभी देशों में और देशों के बनाए हुए माल के साथ कम्पलीट कर सकते हैं, उनसे होड़ कर सकते हैं और उनसे बेहतर ये साबित हुए हैं। ये विशेषता है हमारे नियार्तों की।

हमारे निर्यात इतने बढ़ गये हैं, एक साल में हमने 20 प्रतिशत निर्यात में बढ़ोत्तरी करके दिखाया है। यह कोई छोटी बात नहीं है, भारत जैसे पिछड़े हुए देश के लिए यह बहुत बड़ी बात है। और जो हमारा पूंजी निवेश भी हुआ है, कई लोगों ने ये नारा भी उठाया है कि यह सब बड़े-बड़े लोगों के लिए किया गया है। मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह बिलकुल गलत। अस्सी प्रतिशत हमारा जो पूंजी निवेश है वो ऐसी चीजों के लिए है जिनकी हमें नितांत आवश्यकता है। जिसको हम इनफ्रास्ट्रक्चर कहते हैं, जैसे- बिजली है, जैसे पैट्रीलियम है, जैसे फौलाद है। इस प्रकार के जो बेसिक जिनको कहते हैं, मौलिक जो हमारी आवश्यकताएं हैं, हमारे उद्योग जो हैं मौलिक, उनमें हमने लगवाया है। इसलिए यह कहना कि यह केवल कंज्यूबलरिज्म के लिए किया गया है, केवल उपभोक्ताओं के लिए किया गया है या उपभोक्तावाद के लिए किया गया है। यह बिलकुल गलत मैं आपको बताना चाहता हूं। यह गलत है ऐसा सोचना क्योंकि हमारे पास आंकड़ें सब मौजूद हैं।

आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि आज हमारे देश में जो दूध का उत्पादन हो रहा है, वो सारे विश्व में दूसरे नम्बर पर है। हम से अधिक कोई देश उत्पादन कर रहा है, तो वो केवल अमेरिका है। अमेरिका को छोड़कर कोई देश हमारे बराबर उत्पादन नहीं कर रहा है दूध का। यह सुनकर मुझे भी बड़ी खुशी हुई क्योंकि हम सोचते नहीं थे कि तीन चार साल के अंदर दूध के उत्पादन में हमारा देश इतनी अद्‌भूत प्रगति कर पाएगा। मगर यह सत्य है और यह हुआ है।

फिर हमने किसानो के लिए दाम बढ़ाए हैं। उनके लिए जो इंतजाम खाद का होना है, उसका भी कर दिया है। ठीक है कि अभी-अभी उनके पास से कुछ शिकायतें आ रही हैं कि कुछ और चाहिए। कीमतें बढ़ीं हैं खाद की। उसके बारे में भी सोच रहे हैं और उनसे बातचीत करके, कोई कुछ और करना होगा तो वो भी करेंगे। इसमें कोई परेशानी की बात नहीं है। लेकिन जो हमारे किसानो ने करके दिखाया है, वो एक चमत्कार है। उस चमत्कार के नाते मैं उनको बधाई देना चाहता हूं और यह कहना चाहता हूं कि आप इसी तरह से आगे बढिये और हमारी तरफ से जो मदद चाहिए, वो मिलती रहेगी। उसमें कोई शंका की बात नहीं है, किसी आशंका की बात नहीं है।

अब मैंने आपके सामने इस साल के जो कार्यक्रम रखे हैं, उनका निचोड़ यह है कि हम सामाजिक प्रगति के लिए, सामाजिक कल्याण के लिए जो भी कार्यक्रम करना चाहते हैं, वो बहुत बड़े पैमाने पर हम कर रहे हैं। हमने सन् 91 में जहां 8 हजार करोड़ खर्च किये थे ग्रामीण विकास पर और सोशल सर्विसेस पर सामाजिक सेवाओं पर। इस साल 18 हजार खर्च करे रहे हैं, 18 हजार करोड़। तो ये जो पैसा हम भेजते जा रहे हैं, गांव-गांव तक पहुंचने के लिए और वहां के लोगों को राहत पहुंचाने के लिए, उनके रोजगार को बढ़ाने के लिए, उनको नये-नये मौके पैदा करने के लिए और उनके स्तर को ऊंचा करने के लिए। यह कार्यक्रम बड़ा व्यापक कार्यक्रम है। ये मैं नहीं कहता हूं कि जितना कुछ होना था, वो हो गया। यह कोई भी नहीं कह सकेगा और यह काम चलता रहेगा लगातार, और चलता रहेगा, और चलता रहेगा, और जितना हमारे पास पैसा आयेगा, हमारे पैसा जितना बचेगा औद्योगीकरण का, वो सारा पैसा हम गरीबी हटाने के इस महान बृहत कार्यक्रम पर, देशव्यापी कार्यक्रम पर हम लगा रहे हैं और लगाना चाहते हैं। यह हमारी नीति रहेगी, इसके बारे में मैं कह चुका हूं। उसे फिर से दुहरा रहा हूं क्योंकि इसमें गलतफहमी पैदा करने की कोशिशें हो रही हैं। ऐसा नहीं समझना चाहिए किसी को, कि हमारा कार्यक्रम जो मैंने आपके सामने रखा, उसको छोड़कर और कोई है।

हां, हमें चौकस रहना है। हमें अपनी सरहदों पर चौकस रहना है। हमारा जो रिसर्च प्रोग्राम है, शोध कार्य का जो प्रोग्राम है, उसमें कोई कमी नहीं आने देना है। यह हम बराबर करेंगे। हमारी जो उन्नत शिक्षा है, आई.आई.टी. वगैरह जो हमारे बड़े-बड़े इंस्टीट्यूसंस हैं, जिनसे हमारे लड़के पढ़कर के बाहर निकलते हैं। तो उनको दुनिया में कहीं भी नौकरी मिल जाती है, लोग यहां से आ आकर, लोगों को ले जाते हैं। तो उन इदारों को भी, उन संस्थाओं को भी हम बहुत बड़े दर्जे पर पहुंचाना चाहते हैं, बड़े स्तर पर। क्योंकि उनमें जो मशीनरी है, वो पुरानी पड़ चुकी है और उसका नवीनीकरण होना चाहिए। वो भी हम कर रहे हैं। और सबसे बड़ा हमारा जो कार्यक्रम है, बृहत कार्यक्रम वो पाठशालाओं का है। हम चाहते हैं कि निरक्षरता इस देश से दूर हो। यह कहा गया है कि इस शताब्दी के अंत तक भारत में बहुत ज्यादा निरक्षर हो जायेंगे। इतने निरक्षर होंगे कि दुनिया के किसी दूसरे मुल्क में नहीं होंगे। इससे हमारा सिर झुक जाता है। कुछ शर्म जैसी लगती है कि हमारा यह हाल होने वाला है। इसलिए हमने तय किया है, मैंने इसकी घोषण भी कर दी है कि अगले पंचवर्षीय योजना में हमारी जो राष्ट्रीय आय होगी, राष्ट्र की जो आमदनी होगी उसका 6 प्रतिशत हम शिक्षा पर खर्च करेंगे। यह 30 साल पहले कहा गया था, भारत सरकार की नीति में 30 साल पहले इसका उल्लेख हुआ था। तीस साल तक हम नहीं कर पाये कई कारणों से। आज हम कर सकते हैं। आज इस स्थिति में हैं कि 9वीं पंचवर्षीय योजना से शुरू करके, हम इतने बड़े देश में और इतने बड़े पैमाने पर हम शिक्षा पर खर्चा करेंगे और यह संकल्प हमारा हो चुका है।

कई रोजगार योजनाओं में कहीं-कहीं लीकेजेस हो सकते हैं। मैं यह मानता हूं कि कई चीजों में कुछ गलतियां भी हो सकती हैं, लेकिन उनको ठीक करने की हमें कोशिश करनी चाहिए। उनका बात का बतंगड़ बना करके लोगों में एक नैराश्य पैदा करने की कोशिश हमें

नहीं करनी चाहिए। हम सबको सहयोग देना चाहिए इस कार्यक्रम में। मैं आप से यही अपेक्षा रखता हूं, आप से यही प्रार्थना करना चाहता हूं।

अब रही भविष्य की बात। आप जानते हैं, आज बहुत बड़ी संख्या में विकासशील देश हैं हमारे विश्व में, लेकिन कई ऐसे देश हैं जो विकासशील आज होते हुए भी विकासशील नहीं बनना चाहते, नहीं बने रहना चाहते हमेशा के लिए। उनमें ऐसी कोशिश हो रही है कि वो विकसित देश हो जायें। कई देश हमारे आस पास हैं, साउथ-ईस्ट एशिया में हैं और कहीं हैं, जिन्होंने यह तय कर लिया है कि अगले 25 साल में हम विकसित देश बनकर रहेंगे। और विकासशील देशों के जुमरे से, उस सबसे हम अलग हो जायेंगे और विकसित देशों की श्रेणी में हम जाकर बैठ जायेंगे। आप सोचिये, भारत में किस बात की कमी है। हमारे पास साधनों की कमी नहीं है। हमारे पास कुशल लोगों की कमी नहीं है। हमारे पास संकल्प की कमी नहीं है। इसलिए मैं यह समझता हूं कि 25, 30 साल के अंदर हमारा देश भी विकसित देशों के बीच में जाकर बैठ सकता है। ऐसी पोटेंशियल हमारे पास है। एक शर्त यह है कि हम अपनी तवाहनाई, अपनी शक्ति का अपव्यय न करें अनावश्यक बातों में। हम लगे रहे पूरे लगन के साथ, एक ही लक्ष्य को हासिल करने में। और लक्ष्य शुद्धि हममें होगी, तो हमें इसमें कामयाबी मिलेगी। मैं भविष्य के बारे में इतना ही कह सकता हूं कि इतना बड़ा देश और हम सब इस काम में लग जायेंगे, संकल्प करके आगे बढ़ेंगे, तो अन्य देशों ने संकल्प किया है, हमारा भी संकल्प पूरा हो जायेगा। और इसमें किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। यह मैं देख सकता हूं, भविष्य में देख सकता हूं और जब यह बात मैं कहता हूं कि विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है जो इसको नहीं मानता। हमारी पोटेंशियल को सब मान चुके हैं। हमारे पोटेंशियल को सब पहचान चुके हैं, इसीलिए हमारे पास आने के लिए तैयार हैं। पूंजी निवेश करने के लिए तैयार हैं। हमारे साथ सांझे में आने के लिए तैयार हैं। और हमारी प्रगति में अपना जो भी रोल है, योगदान है, वो देने के लिए तैयार हैं। तो आज हमें किसी बात की कमी नहीं है। संकल्प चाहिए और एकाग्रता चाहिए अपने लक्ष्य को हासिल करने में। ये दोनों हमारे पास हों, तो फिर कोई और परेशानी हमें नहीं रहेगी, यही मैं आपसे कहना चाहता हूं।

अभी अभी जो मैंने इस साल के लिए कार्यक्रम शुरू किये, वो अभी से शुरू हो रहे हैं। एक ऐसा कार्यक्रम है जो हम 20 तारीख से, स्वर्गीय राजीव गांधी के जन्म दिन से शुरू करना चाहते हैं, वो इंदिरा महिला योजना का कार्यक्रम है। उन्होंने बड़े परिश्रम से उस कार्यक्रम को खुद बनाया था, इसलिए हम उनके जन्म दिन पर इसको शुरू करना चाहते हैं। कोई 200 ब्लॉक हमने लिए हुए हैं। जहां केवल महिलाओं का जो कार्यक्रम होगा, बड़ा सघन कार्यक्रम होगा। उस कार्यक्रम को हम लेना चाहते हैं और 20 तारीख से वो शुरू हो जायेगा।

कुछ और भी बाते हैं जो आपके सामने मैं रखना चाहता हूं। यह एक ऐतिहासिक स्थान है। यहां से बहादुर शाह जफ्फर ने छेड़ी थी जंग ब्रिटिश सरकार के खिलाफ। यह वही जगह है जहां हमारे आई एण्ड ए नेता जी सुभाष चंद बोस के साथ जिन्होंने लड़ाई लड़ी थी, उनको यहां रखा गया था और उन पर मुकदमा भी चलाया गया था। आपको याद होगा कि उस मुकदमे में उनकी तरफ से बहस करने के लिए, कार्यवाई करने के लिए पंडित जवाहर

लाल नेहरू भी बहुत दिनों के बाद, पता नहीं कितने साल के बाद वकील बनकर आये थे और उनको डिफेंड किया था। यह ऐसी ऐतिहासिक जगह है। इस जगह को जहां उन पर मुकदमा चलाया गया था, हम एक प्रदर्शनी के रूप में, एक म्यूजियम के रूप में बना रहे हैं। और वो म्यूजियम यहां शुरू होगा 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी के 125वीं जन्म दिन के अवसर पर। हम उसे शुरू करना चाहते हैं, जिससे लोगों को लगे, लोगों को प्रत्यक्ष नजर आए कि इन देश भक्तों ने कैसा काम किया था। नेता जी की हम जन्म शताब्दी मना रहे हैं और हमारे जो अग्र नेता हैं, उनमें से देश के बाहर रहकर जिन्होंने देश की आजादी के लिए बहुत कुछ एक हवा बनाने की कोशिश की, बहुत कुछ किया वो थे वी.के. कृष्णमेनन। उनकी भी जन्म शताब्दी हम मनाना चाहते हैं। तो इन महानुभावों की जन्म शताब्दी मनाने और उनकी याद को ताजा करने का कार्यक्रम हमारे पास बन रहा है। और इस लाल किले के इस परिसर में जो म्यूजियम आयेगा, वो आने वाली पीढ़ियों को उन महान वीरों के बारे में, देशभक्तों के बारे में याद दिलाता रहेगा, यह मैं आशा करता हूं। यह हमारे कार्यक्रम हैं जो ... (अस्पष्ट) को, जो विगत हमारे इतिहास को याद दिलाते है।

थोड़े में हमारे विदेश नीति के बारे में मैं आप से कुछ कहना चाहता हूं। हमारी विदेश नीति पिछले 4 सालों में बहुत ही कामयाब रही है। पहले भी थी पंडित जी के जमाने से, इंदिरा जी ने उसे और चार चांद लगाया, राजीव जी ने आगे बढ़ाया। फिर अब उसे हम बरकरार रखते हुए, बल्कि आज कुछ उसमें बढ़ोतरी इस माने में हुई है कि अब शीत युद्ध का समय समाप्त हो गया। आज शीत युद्ध के अब अनुपस्थिति में, उसके समाप्त होने के बाद एक नया वातावरण सारे विश्व में बना है। इस वातावरण में सबसे दोस्ती निभाना आसान भी है और मुश्किल भी है। क्योंकि इस वातावरण में कोई कन्फ्रंटेशन नहीं है। सभी के साथ अच्छे सम्बंध हमारे बनाने हैं और साथ ही साथ अपना जो राष्ट्रीय हित है उसकी पूरी रक्षा करना है। उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं आने देना है। यह जरा मुश्किल काम है, लेकिन 4 साल से हम इसको बराबर निभाते आए हैं। जिन राज्यों से, जिन देशों से पहले से हमारे अच्छे संबंध थे, उनको और अच्छे संबंध बनाये हैं। जो अच्छे उतने नहीं थे, उनको अच्छे बनाये हैं। आज मैं यह कह सकता हूं कि हमारे देश के संबंध सभी देशों से मधुर हैं। सभी देशों से अच्छे हैं, उनका सहयोग हमें मिल रहा है और उनकी सहानुभूति मिल रही है। कश्मीर को लेकर सभी हमारी समस्याओं के बारे में उनको हमने अवगत किया है। और सभी समस्याओं के बारे में हमारी जो नीतियां हैं, उनको वो अच्छी तरह से जान गये हैं और उसे अप्रिसिएट भी करते हैं, उसको पसंद भी करते हैं। ऐसे हमारे संबंध उनके साथ हो गये हैं। ये हमारे लिए शुभ लक्षण है। यह हमारी प्रगति के लिए अच्छा लक्षण है। और हमारी प्रगति में कहीं से कोई बाधा नहीं आयेगी। यह होगा कि व्यापार के क्षेत्र में एक दूसरे से होड़ हो सकती है। यह तो नजर आ रहा है, नजारा हमारे सामने। कई ऐसे देश हैं जो आपस में कुछ एक दूसरे से टकरा रहे हैं। पूरी तरह से नहीं भी टकरा रहे हैं, तो उनमें थोड़ा तनाव पैदा हो गया है। इस तनाव की परिस्थिति में भारत को अपना रास्ता आगे निकालना है। और इसमें से रास्ता आगे निकालने में इस तनाव में हमें नहीं आना है। उन तनावों का शिकार हमें नहीं होना है। तो ये तलवार की धार पर चलने की बात है। और उसी प्रकार हम चल रहे हैं और चलना चाहते हैं। मैं आपको आश्वासन दिलाता हूं कि भारत की जो विदेश नीति होगी, वो

भारत के हितों की पूरी-पूरी रक्षा करेगी। और साथ-साथ सारे विश्व में, विश्व की परिस्थितियों में, बदलती परिस्थितियों में जो भारत का अपना रोल है, जो हमारी भूमिका है, उसे हम पूरी तरह से निभायेंगे। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है और उसके मुझे दृष्टांत हर जगह मिलते हैं, जहां कहीं मैं बाहर जाता हूं। तो भारत के बारे में लोग क्या सोचते हैं और फिर हमारी संभावनाएं क्या हैं सामने, उनके बारे में मुझे पूरा-पूरा एक चित्र मिल जाता है वहां।

मैंने आपका बहुत समय लिया, लेकिन यह लेखा-जोखा आपके सामने रखना जरूरी था। इनमें से कई काम ऐसे हैं जो आप जानते हैं। कई योजनाएं ऐसी हैं जिनके बारे में आप सुन भी चुके हैं, देख भी चुके हैं। लेकिन हर साल थोड़ा-थोड़ा जब करते जाते हैं, तो मजबूरी तौर पर कुल मिलाकर चित्र सामने नहीं आता, इसलिए मैंने अपना यह कर्तव्य समझा कि 4 साल में जो भी हुआ है, उसका ब्यौरा आपके सामने संक्षेप में रख दूं, यह मैंने किया है।

अब 5वीं बार चुनकर मैं आपके सामने उपस्थित हूं। मैं इतना ही कह सकता हूं कि हमारा पूरा जो उपलब्धि का आंकड़ा है, अंचना है उसको देख लीजिए। और उसके इसके हिसाब से ही आप इस सरकार के बारे में अपनी राय कायम कीजिए। मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि कुल मिलाकर इस सरकार की उपलब्धियों को सराहा जायेगा और सभी देशवासी हमें आशीर्वाद देंगे। अब आगे की जो बात है, उसके आप मालिक हैं, उसमें मुझे कुछ कहना नहीं है। मुझे जो कुछ कहना था, मैंने आपके सामने संक्षेप में रख दिया। बहुत-बहुत आपको धन्यवाद, आपने मेरी बात सुन ली।

अब मैं आप सबको आमंत्रित करता हूं, आप मेरे साथ जय हिंद का नारा लगाइए, जो हमारा प्यारा नारा है -

जय हिंद, (जनसमूह....जय हिंद)
जय हिंद, (जनसमूह....जय हिंद)
जय हिंद, (जनसमूह....जय हिंद)
धन्यवाद।